यदि आपकी किसी भूल के कारण आपका कल का दिन बुरा बीता तो उसे आज याद कर अपना समय व्यर्थ मत करें। –अज्ञात।

विचार-प्रवाह देहरादून, शुक्रवार, 15 अप्रैल 2022

पेज थ्री
www.page3news.in

स्वतंत्र विदेश नीति कायम रहे

आज भी भारत गुटनिरपेक्षता की परंपरागत विदेश नीति पर चल रहा है, जो मूल्यों पर आधारित रही है। यह आजादी के बाद से भारतीय विदेश नीति की बुनियाद रहा है। इसी नीति की वजह से दुनिया में भारत ने स्वतंत्रता मिलने के तुरंत बाद ही अपनी पहचान बना ली थी।

राधा जोशी।।

यूक्रेन में हालात जैसे–जैसे बिगड़ते जा रहे हैं, दुनिया भर में इस युद्ध के दुष्प्रभावों को लेकर बहस भी तेज होती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से रूसी हमले के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पारित कराने का प्रयास नाकाम हो जाने के बाद वैसा ही प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा की आपात बैठक में पेश किया गया। यह प्रस्ताव भारी बहुमत से पारित हो गया, लेकिन सुरक्षा परिषद की ही तरह यहां भी भारत ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। भारत को अपने रुख पर दोबारा विचार करना चाहिए। उसके मुताबिक मतदान से गैरहाजिर रहकर तटस्थता दिखाने के बजाय भारत को इस मामले में खुलकर रूस के खिलाफ स्टैंड लेना चाहिए। संपादकीय कहता है कि आक्रमणकारी भूमिका में आकर परमाणु युद्ध की धमकी दे रहे रूस के खिलाफ सभी देश एकजुट हो रहे हैं। पारंपरिक तौर पर गुटनिरपेक्ष माने जाने वाले स्विट्जरलैंड और फिनलैंड जैसे देशों ने भी अपना पक्ष स्पष्ट कर दिया है। ऐसे में भारत कब तक अपने पुराने रुख पर बना रह सकता है? संपादकीय में याद दिलाया गया है कि विदेश नीति की सबसे अहम कसौटी हमेशा राष्ट्रीय हित को ही माना जाता है।

मगर सवाल यह है कि क्या मौजूदा हालात में भारत के राष्ट्रीय हित उसे अपना रवैया पूरी तरह बदल कर अमेरिका के पाले में खड़े होने की इजाजत देते हैं? इस संदर्भ में पहली बात यह है जो इन दिनों बार–बार दोहराई भी जाती रही है कि भारत के लिए हथियारों का सबसे बड़ा सप्लायर देश रूस ही है। इसमें रातों–रात कोई बदलाव नहीं लाया जा सकता। ऐसा करने पर अरबों डॉलर के हथियार किसी काम के नहीं रह जाएंगे और नई सप्लाई हासिल करने में वक्त लगेगा। इससे देश की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। दूसरी बात यह है कि भारत ने यूक्रेन मामले में तटस्थ रुख अपनाया है। युद्ध जल्द खत्म करने की अपील की है। वह शांतिपूर्ण तरीके से इस मसले का समाधान निकालने का हिमायती है। आज भी भारत गुटनिरपेक्षता की परंपरागत विदेश नीति पर चल रहा है, जो मूल्यों पर आधारित रही है। यह आजादी के बाद से भारतीय विदेश नीति की बुनियाद रहा है। इसी नीति की वजह से दुनिया में भारत ने स्वतंत्रता मिलने के तुरंत बाद ही अपनी पहचान बना ली थी। गुटनिरपेक्षता के कारण ही शीत युद्ध के दौरान भारत ना ही सोवियत संघ और ना ही अमेरिका के कैंप में गया। भारत आज भी उन्हीं सिद्धांतों पर चलते हुए, अपने राष्ट्रीय हितों को देखते हुए क्वाड जैसे मंचों पर अमेरिका के साथ है तो दूसरी तरफ चीन के दबदबे वाले शंघाई को–ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन और आसियान के साथ भी जुड़ा हुआ है। रूस भी शंघाई को–ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन का अहम सदस्य है। इसलिए यूक्रेन मामले में भी भारत को यह नीति नहीं छोड़नी चाहिए।

प्रतिनिधित्व

अशोक वोहरा।

मानव प्रजाति कुछ पशु रूप के विकास का प्रतिनिधित्व करती है। उनका यह कथन इस तथ्य पर आधारित है कि जन्म के कुछ समय बाद ही पशु अपने आप जीवित रह पाते हैं। यह इस कारण से है, कि इस प्रजाति के लिए जानवरों की उत्पत्ति के पूर्वजों के नहीं रहने के लिए यह असंभव था। उनकी सबसे लोकप्रिय परिकल्पनाओं में से एक का प्रस्ताव था कि मानव प्रजाति गर्म पानी, पृथ्वी और मछली या उनके जैसे जानवरों के मिश्रण से उभरी है। यौवन तक पहुंचने तक इन प्राणियों को भ्रूण के रूप में रखा गया था, इस चरण के बाद, कोकून का एक विस्फोट हुआ जिसने प्रजातियों को खिलाने की अनुमति दी। उनके तर्क के अनुसार दुनिया विरोधाभासों द्वारा चिह्नित है, उदाहरण के लिए, कुछ हिस्से तरल और अन्य ठोस हैं, इसलिए मूल सामग्री को इन सभी विरोधाभासों को कवर करने में सक्षम होना चाहिए।

संपादकीय

सामाजिक रूढ़ियाँ

विभिन्न ग्रंथों को पढ़ने और स्नोव्हाइट और सिंड्रेला, लैला–मजनू, रोमियो–जूलियट, सोहनी–महिवाल जैसी कथाओं को पढ़ने के बाद, यह चौंकानेवाला तथ्य सामने आता है कि विवाह की धारणा प्रेम की धारणा से बहुत अलग है। प्रत्येक समाज विवाह को दो अजनबियों के बीच एक पारिवारिक, सामाजिक और पवित्र बंधन के रूप में परिभाषित करता है और पुजारियों की उपस्थिति में धार्मिक समारोहों के साथ विवाह किया जाता है। सामाजिक जीवन में विवाह की उपस्थिति इतनी प्रबल है कि सभी कानूनी दस्तावेजों में 'वैवाहिक स्थिति' नामक एक विशेष अनिवार्य कॉलम होता है। नौकरी के आवेदन, आयकर रिटर्न, पासपोर्ट, चुनावी नामांकन– हर जगह याद दिलाया जाता है– शादी। कोई भी महान व्यक्ति हो, उसकी जीवनी वैवाहिक जानकारी के बिना पूरी नहीं होती। दुनिया में सबसे शक्तिशाली भावना, जिसे 'प्रेम' (प्रणय)कहा जाता है, कोभी शादी (परिणय)के बिना कोई सामाजिक या धार्मिक मान्यता नहीं मिलती है। कितना भी पवित्र प्रेम हो, उसे तभी सफल माना जाता है जब वह विवाह में परिणत हो। लेकिन बिना प्रेम के शादी होने और पूरे विवाहित जीवन में प्रेम न होने पर भी शादी को सामाजिक और धार्मिक– दोनों तरह की मान्यता प्राप्त है। कुछ समाजों में विवाह मनुष्य के सात जीवन के लिए एक बंधन के रूप में माना जाता है। जिस विवाह में प्रेम न हो, उसके प्रति सम्मान विकसित करना नारी के लिए मुश्किल होता है और वह सिर्फ सामाजिक अपराधियों से बचने के लिए एक अनिवार्य बंधन के रूप में सहन किया जाता है। फिर भी, सामाजिक और धार्मिक स्वीकृति मिलने के कारण विवाह एक मजबूत संस्था के रूप में जाना जाता है और प्रेम से अधिक पवित्र माना जाता है।

पितृसत्तात्मक समाज के लोभ और अहंकार से उपजी जटिलताओं और कुटिलताओं ने नारी को अपनी प्राकृतिक 'संपत्ति' माना- इतनी कीमती संपत्ति कि उसे अपने नियंत्रण में करने के लिए एक जुनून होता है।

नारी को कभी मुक्त नहीं होने देता

सुधा कुमारी।।

नारी सर्वशक्तिमान की सबसे सुन्दर जीवित रचना है जिसे एक कोमल और मनोरम बाह्य रूप, रचनात्मक मस्तिष्क और स्नेह भरा दिल मिला है। सर्वशक्तिमान ने उसे जन्म देने और पालन–पोषण करने की विशेष प्राकृतिक शक्ति सौंपी है। सभी संस्कृतियाँ और समाज जीवन में नारी के महत्व को स्वीकार करते हैं। लेकिन पितृसत्तात्मक समाज के लोभ और अहंकार से उपजी जटिलताओं और कुटिलताओं ने नारी को अपनी प्राकृतिक 'संपत्ति' माना– इतनी कीमती संपत्ति कि उसे अपने नियंत्रण में करने के लिए एक जुनून होता है।

इस कीमती संपत्ति पर नियंत्रण खोने के डर से पितृसत्तात्मक समाज नारी को कभी मुक्त नहीं होने देता। उसे हमेशा नियंत्रण में कस कर रखने के लिए और मनुष्य की स्वतंत्रता की धारणा को नीचा दिखाने के लिए नारी पर 'मोरल पुलिसिंग' या नैतिकता का खंजर का सख्ती से अभ्यास किया जाता है। जहाँ एक आदमी को खाने, पीने, कपड़े पहनने, घूमने, शादी करने और काम करने की पूरी आजादी है वहीं एक नारी को अक्सर समाज की नैतिक अनुमति लेने के लिए मजबूर किया जाता है कि कैसे कपड़े पहने, कहाँ और किसके साथ घूमे, किससे शादी करे, कहाँ और क्या काम करे।

भारत में बहुत सारे रीति–रिवाज हैं जिसने पत्नी पर अधीनस्थ बनने का सामाजिक दबाव डाला है। यह स्पष्ट नहीं है कि पत्नी उसके अधीनस्थ के रूप में कैसा महसूस करती है– दिल की रानी की तरह या दासी की तरह। लेकिन यह एक स्पष्ट है कि इस तरह के रीति–रिवाज न केवल पति के सामने बल्कि अपने बच्चों के सामने भी पत्नी का सम्मान कम कर देते हैं, जो अपनी माँ को अपने पिता के बराबर नहीं बल्कि अपने जैसे अधीनस्थ के रूप में पाते हैं। इस कारण ये बच्चे अपने जीवन में नारी के प्रति सम्मान विकसित नहीं कर पाते हैं। यानी सर्वशक्तिमान की उपासना करने में भी नारी को सक्षम नहीं माना जा रहा बल्कि उसे पुरुष की उपासना करने को कहा गया। आपने संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति और संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रथम महिला जैसे संक्षिप्त अक्षर (ऐक्रोनिम)सुने होंगे। लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे मजबूत और आजाद देश में– जहाँ विमेंस लिब आन्दोलन आया–आज तक मैडम प्रेसिडेंट की कोई मिसाल नहीं है। नारी को कमजोर, अपने पति श्रीमान कखग की छाया और अधीनस्थ के रूप में मानने की मानसिकता और पितृसत्ता (पैट्रियार्की)पुरुषों द्वारा महिला कैंडिडेट को गले लगाने और चूमने तो देती हैं मगर जीतकर मैडम प्रेसिडेंट बनने के लिए कोई स्थान नहीं देती है। भारत के पास ऐसा कोई संक्षिप्त अक्षर (ऐक्रोनिम)नहीं है और उसे पिछले 74वर्षों में कम से कम एक मैडम प्रेसिडेंट औरएक मैडम प्राइम मिनिस्टर पाने का अवसर मिला है। यूरोप, न्यूजीलैंड, उत्तर अमरीकी महाद्वीप और अफ्रीका– यहां तक किएशिया के श्रीलंका और बांगलादेश जैसे छोटे देशों में भी मैडम प्रेसिडेंट और मैडम प्राइम मिनिस्टर की मिसाल कायम है। इतिहास गवाह है कि जिस समाज में अहंकार है और उसका मुखिया अपने को 'ही–मैन' समझता है, वहाँ न्याय, नारी और नैतिकता सदैव खतरे में है। ऐसे अहंकारी देशों के पड़ोसी देश भी खतरे में रहते हैं।

सूडोकु नवताल- 5347

***** (कठिन स्तर)

				1			6	
					5			
2		3	9			8		
6							5	
			8		3			
	1							4
		7			1	3		9
			2					
	5			6				

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5346 का हल

7	6	8	2	1	9	3	4	5
2	1	5	6	3	4	8	7	9
3	4	9	5	7	8	6	1	2
5	7	4	8	6	1	9	2	3
9	2	1	3	4	5	7	8	6
8	3	6	7	9	2	1	5	4
1	5	3	4	8	5	2	9	7
4	9	7	1	2	3	5	6	8
6	8	2	9	5	7	4	3	1

अपना ब्लॉग

रीति–रिवाज प्रेम के सिद्धांत के बिल्कुल विपरीत

मोहन। शादी में 'जीवन साथी' की धारणा को उदारतापूर्वक दुहराया जाता है, लेकिन इसकी असली तस्वीर बहुत अलग है। हर समुदाय में विवाह पत्नी को पति के कब्जे की 'संपत्ति' और उसके अधीनस्थ के रूप में परिभाषित करता है, न कि जीवन साथी की तरह। शादी के दौरान और बाद के रीति–रिवाज प्रेम के सिद्धांत के बिल्कुल विपरीत हैं। प्यार में आपसी प्यार और सम्मान के आधार पर साथी बनते हैं। प्रेम कथाओं के नायक का यह विशिष्ट दृश्य है किवह नायिका को लुभाने के लिए और उसे पाने से पहले जीवन भर उसके पीछे भागता है, यहाँ तक कि उसके बिना मरने की कसम भी खा लेता है। लेकिन उसे पाने और शादी के बाद तस्वीर अचानक पूरी तरह से और भयानक रूप से बदल जाती है जहां नायक उस नायिका के जीवन का कमांडर–इन–चीफ बन जाता है। पति बनते ही नायक का सम्मान नायिका के सम्मान से बहुत ऊपर हो जाता है। अब नायिका को कसम दिलाई जाती है कि वह नायक की आज्ञाकारी सेवक बनकर जीवन भर उसके पीछे दौड़े।